जल का गहराता संकट और समाधान

डा. मधुबाला
रीडर, पत्रकारिता विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र(हरियाणा)

जल ही जीवन है, इसकी एक-एक बूंद मूल्यवान है। जल का संरक्षण करें.....शहर में दो दिन जल आपूर्ति न होने से लोग सड़कों पर उतर आये....दूषित जल पीने से लोग गैस्टराइटिस का शिकार.....ऐसे कितने समाचार हम मीडिया पर प्रतिदिन पढ़ते, सुनते और देखते हैं। हाल ही में बिजली, पानी और सड़क चुनावी मुद्दे बने रहे। जाहिर है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। शहर व गांव के कुछ हिस्सों में तो वाटर टैंकरों के द्वारा पीने का पानी पहुंचाया जा रहा है। धरती पर बढ़ रहा जनसंख्या का बोझ शहरीकरण व औद्योगिकीकरण से हमारा पर्यावरण पूरी तरह दूषित हो गया है और हो रहा है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव जल पर पड़ रहा है। शुद्ध जल की समस्या का संकट दिनों दिन गहराता जा रहा है। जो नदियाँ, पोखर और तालाब वर्ष भर जल आपूर्ति में सहायक होते थे, वे सूखते जा रहे हैं। वर्षा साल में केवल तीन चार महीने ही होती है। उसकी भी अनिश्चितता बनी रहती है। कहीं बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है तो कहीं सूखे की मार झेलनी पड़ती है। कहीं सामान्य से अधिक वर्षा होती है तो कहीं सामान्य से कम। जहाँ राजस्थान में केवल 100 मिली मीटर वर्षा होती है वहीं चेरापूंजी में 10,000 मिली मीटर वर्षा होती है। यद्यपि हमारी पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, लेकिन स्वच्छ जल की मात्रा केवल 2.5 प्रतिशत है जो नदियों, भू जल और हिम के रूप में उपलब्ध है। 97.5 प्रतिशत जल खारा है। जिसे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। इसलिए जो जल मनुष्य को नदियों, झीलों और दलदल के इलाकों से प्राप्त होता है उसकी मात्रा एक प्रतिशत से भी कम रह जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार धरती पर प्राप्त होनेवाले जल का केवल 0.007 प्रतिशत ही प्रयोग में लाया जाता है। विश्व जल संसाधनों में भारत का हिस्सा 4 प्रतिशत है जबकि विश्व की 16 प्रतिशत जनसंख्या यहाँ रहती है। सतही भू जल से हमें 1869 अरब घनमीटर पानी उपलब्ध होंता है, जिसका 60 प्रतिशत ही प्रयोग होता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण प्रतिव्यक्ति जल की उपलब्धता कम होती जा रही है।

वर्ष 1950 में पानी की उपलब्धता 5177 घनमीटर थी जो 2001 में घटकर 1820 घनमीटर हो गई है और 2050 तक यह 140 घनमीटर हो जायेगी। दस सालों में 2015 तक देश की आबादी 1.20 अरब हो जायेगी और 2050 तक 1.60 अरब। बढ़ती आबादी को देखते हुए 2015 तक 75 अरब घनमीटर और 2050 तक 130 अरब घनमीटर अतिरिक्त जल भाण्डारण की क्षमता उत्पन्न करनी होगी।

कुछ समय पहले वैज्ञानिक पानी की गुणवत्ता को लेकर चिन्तित थे, लेकिन अब पानी के खत्म हो रहे संसाधनों के बारे में चिन्तित हैं। 1992 में डबलिन में हुई कांफ्रेंस में जल और पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में विचार व्यक्त किए गए। 1997 में संयुक्त राष्ट्र में हुए जल सम्मेलन में जल मात्रा की उपलब्धता पर चिन्ता व्यक्त की गई। एक तरफ जल का अधिक प्रयोग बढ़ता जा रहा है तो दूसरी ओर जल स्तर लगातार घटता जा रहा है। इसका मुख्य कारण शहरीकरण और वृक्षो की कटाई है। वृक्षों को काटकर कंकरीट जगल में खड़े किए जा रहे हैं,

जिससे वर्षा का पानी या तो व्यर्थ बह जाता है या जगह जगह एकत्र हो जाता है जो अनेक बीमारियों का कारण बनता है। औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र में आई क्रांति के कारण भी पानी निरन्तर दूषित ओता जा रहा है। उद्योगों से निकलने वाला रासायनिक युक्त जल बिना साफ किए ही नदियों में बहा दिया जाता है जिससे न केवल मानव को बल्कि जीव जन्तुओं को भी खतरा पैदा हो गया है। जिस यमुना के किनारे बैठकर लोग तपती गर्मी से राहत महसूस करते थे, वही यमुना एक गंदा नाला बन चुकी है। धार्मिक अवसरों पर लोग गंगा यमुना में स्नान करना पवित्र मानते थे। वहाँ अब नगरपालिकाओं ने बोर्ड लगा दिए हैं कि यमुना के दूषित जल से स्नान करने से चर्म रोग हो सकते हैं। कई स्थानों पर भू जल का अत्यधिक दोहन करने से आर्सेनिक व फ्लोराइड आदि तत्व पेयजल के साथ ऊपर आ जाते हैं। जिस कारण कई घातक बीमारियाँ पनप रही है। शहरी कस्बों में पीने योग्य पानी नहीं रहा, क्योंकि खारेपन की मात्रा बढ़ गई है। कृषि उत्पादन के लिए कीट नाशकों का प्रयोग किया जा रहा है। जिससे धरती की उर्वरक शक्ति पर तो प्रभाव पड़ा है और इस के साथ ही इन दवाईयों का प्रभाव भू जल पर भी पड़ा है।

हरियाणा में 46 ऐसे डार्क क्षेत्रों की पहचान की गई है, जहाँ पर भू जल स्तर नीचे पहुँच गया है। भू जल एक बैंक के समान है, जितना जल उसमें से निकाला जाता है, यदि उतना जल न डाला जाय तो जल स्तर अवश्य नीचे चला जायेगा, जिससे जल की स्थिति और गंभीर हो जायेगी।

भारत में प्रतिवर्ष होने वाली वर्षा के 40 करोड़ हैक्टेयर मीटर पानी में से लगभग 7 करोड़ हैक्टेयर मीटर पानी वाष्प बनकर उड़ जाता है, साढ़े ग्यारह करोड़ नदियों में बह जाताहै और 21 करोड़ धरती सोख लेती है जिससे पेड़ पौधों की प्यास बुझती है और मिट्टी की नमी बनी रहती है। इससे भूं जल के स्तर में भी वृद्धि होती है। नदियों में बहने वाले पानी का कुछ हिंस्सा सिंचाई व उद्योगों के काम में लाया जाता है, बाकी समुन्द्र के खारे पानी में मिलकर व्यर्थ हो जाता है। कुछ वर्षा का जल गंदे पानी से मिलकर प्रदूषित हो जाता है, जो धरती के प्रदूषण का कारण बनता है।

दीर्घकालिक जल नीति

जल के बढ़ते हुए संकट को देखते हुए सरकार को जलनीति पर ध्यान देना होगा। इस नीति के अंतर्गत जल संसाधनों को विकसित करना होगा और पानी का अधिक से अधिक संरक्षण करना होगा। पुराने प्राकृतिक जल संसाधनों को पुनर्निमाण करना होगा । तालाब खोदने, बाँध बनाने, चैकडैम व वाटर शैड बनाने से जहाँ बाढ़ से राहत मिलेगी वहीं किसानों को पर्याप्त मात्रा में फसलों के लिए पानी उपलब्ध होगा और जल स्तर में वृद्धि होगी। हमें पानी के दुरूपयोग को रोकना होगा। गंदे पानी को एकत्रित कर उसे शुद्ध बनाकर पेड़ पौधों की सिंचाई के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। वर्षा के पानी को घरों के छतों पर एकत्र कर पाईप के माध्यम से धरती पर टैंक बनाकर सुरक्षित रखा जा सकता है। आधुनिक गृह प्रणाली में वाटर टैंक बनाना सभी घरों में जरूरी कर दिया गया है। इस पानी को कंकर पत्थर डालकर, छानकर शुद्ध बना कर प्रयोग में लाया जा सकता है। गड्डे खोदकर वर्षा के पानी को नीचे स्तर तक पहुंचाया जा सकता है। पानी कम से कम खपत होने वाले साधनों का प्रयोग किया जाए। नल को खुला न छोड़ा जाए बल्कि उतना ही प्रयोग में लाया जाए जितने जल की आवश्यकता हो। कपड़े धोने के पश्चात् बचे पानी को घर की सफाई के प्रयोग में लाया जा सकता है। तालाबों, नदी नालों को और अधिक

गहरा करना होगा ताकि इनमें अधिक से अधिक पानी एकत्रित हो सके ।

राष्ट्रीय स्व-जलधारा की नीति को भूतपूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 25 दिसम्बर, 2002 को लागू किया था। इस नीति के अंतर्गत पीने योग्य पानी की पूर्ति को बनाए रखना, भू जल संवर्धन और वर्षा के पानी को एकत्र करने जैसे तरीकों को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त सरकार ने रेन वाटर हारवैस्टिंग स्कीम लाग की है। पानी की गुणवत्ता की समय समय पर जांच होनी चाहिए। ताकि अशुद्ध जल पीने से होने वाली बीमारियों की रोकथाम हो सके। कुंएँ के जल को दूषित होने से बचाने के लिए उसे ढक कर रखा जाये।

इस प्रकार विभिन्न उपायों द्वारा जल समस्या का हल किया जा सकता है और जल के संकट से बचा जा सकता है। यह चेतावनी तो अभी से मिलने लगी है कि तीसरी विश्व युद्ध तेल के लिए नहीं बल्कि पानी क`लिए लड़ा जायेगा। यदि हम अपना भविष्य सुरक्षित करना चाहते हैं तो हमें इस समस्या पर अभी से काबू पाना होगा।